Rohtas Mahila College, Sasaram. 11.07.20
Dr. Aman Kumar, Dept of Psychology, B.A Part I(H)
Paper I, 2019-20

(Topic - निरीक्षण विधि के गुण एवं दोष)

निरीक्षण विधि के निम्नलिखित गुण हैं। —

(i) वस्तुनिष्ठ विधि — निरीक्षण विधि का एक प्रधान गुण वस्तुनिष्ठ विधि है। इस विधि में निरीक्षणकर्ता प्राणी के व्यवहार का अध्ययन तटस्थभाव से उसी रूप में करता है जिस रूप में वह व्यवहार करता है। यहाँ निरीक्षणकर्ता न तो दूसरों के कथन पर विश्वास करता है और न किसी तरह का अनुमान लगाता है। इसलिए इस विधि के आधार पर जो परिणाम प्राप्त होता है वह विश्वसनीय होता है।

(ii) पुनरावृति — इस विधि में पुनरावृति का गुण पाया जाता है। चेतन अनुभूति की तुलना में व्यवहार अधिक स्थिर होता है। इसलिए इसका बार बार निरीक्षण करना संभव होता है। जैसे - चूहे को पकड़ते समय बिल्ली का जो व्यवहार होता है वह प्रायः सभी परिस्थितियों में समान होता है। अतः निरीक्षणकर्ता बिल्ली के इस व्यवहार का बार बार अध्ययन कर सकता है।

(iii) प्रमाणीकरण - इस विधि में प्रमाणीकरण का भी गुण देखा जाता है। इसका अर्थ यह है कि एक निरीक्षणकर्ता का निष्कर्ष कहाँ तक सत्य है इसकी जाँच कोई भी दूसरा निरीक्षणकर्ता अपने ढंग से कर सकता है। यह गुण अन्य विधि में नहीं है।

(iv) व्यापक क्षेत्र - इस निरीक्षण विधि के अध्ययन विषय का क्षेत्र काफी व्यापक होता है। अन्य विधि से पशु, बच्चे आदि का अध्ययन संभव नहीं है। इसी तरह पागल, गूंगे, बहरे आदि का अध्ययन अन्य विधि से अध्ययन करना संभव नहीं होता है लेकिन निरीक्षण विधि से इन सबका अध्ययन आसानी से किया जा सकता है। अतः अन्य विधि की तुलना में निरीक्षण विधि का क्षेत्र सचमुच काफी बड़ा है। इतना ही नहीं निरीक्षण विधि द्वारा कुछ ऐसे विषयों का भी अध्ययन संभव होता है - जिसका अध्ययन प्रयोगात्मक विधि से संभव नहीं होता है। जंगली पशु के व्यवहारों का यदि हम समुचित अध्ययन

Scanned with CamScanner

करना चाहें तो यह प्रयोग विधि से नहीं बल्कि निरीक्षण विधि से ही संभव हो सकता है। इसी तरह यदि हम वर्ग संघर्ष, साम्प्रदायिक दंगे आदि का अध्ययन करना चाहें तो इसके लिए भी निरीक्षण विधि ही उपयुक्त होगी।

(v) समय तथा श्रम की बचत - निरीक्षण विधि का एक गुण यह भी है कि इसमें समय और श्रम की बचत होती है। अन्य विधि का उपयोग एक समय में केवल एक व्यक्ति का अध्ययन संभव होता है। अतः अनेक व्यक्तियों के अध्ययन में अधिक मेहनत करना पड़ती है तथा अधिक समय भी लगता है। लेकिन निरीक्षण विधि से सभी व्यक्तियों का अध्ययन एक ही साथ संभव हो सकता है, जिससे समय और श्रम की बचत होती है।

(vi) मात्रात्मक अध्ययन - निरीक्षण विधि में एक गुण यह भी है कि इस विधि से ऐसे आँकड़े प्राप्त होते हैं जिनका मात्रात्मक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सकता है और इस विश्लेषण के आधार पर विश्वसनीय निष्कर्ष निकाला जा सकता है। यह गुण अन्य विधि में नहीं है।

निरीक्षण विधि के दोष :-
निरीक्षण विधि के निम्नलिखित दोष हैं।-

(i) चेतन अनुभव के प्रत्यक्ष अध्ययन की अयोग्यता — निरीक्षण विधि द्वारा व्यक्ति की चेतन अनुभूति का प्रत्यक्ष ~~अध्ययन~~ अध्ययन संभव नहीं है। व्यवहार का अध्ययन तो निरीक्षण विधि से हो जाता है। परन्तु चेतन अनुभव का अध्ययन नहीं हो पाता है।

(ii) अनियंत्रित परिस्थिति - इसमें किसी विषय का अध्ययन अनियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। अतः किसी परिणाम के कारण का ठीक ठीक पता नहीं भी चल सकता है। कारण यह है कि अध्ययन विषय या एक साथ कई चरों का प्रभाव पड़ सकता है। जैसे - मान लें कि कोई बच्चा रो रहा हो और हम निरीक्षण द्वारा यह पता लगाना चाहते हैं कि उसके रोने का कारण क्या है। यहाँ

रोने का अनेक कारण हो सकता है। जैसे - कोई भूख के कारण रो रहा हो, कोई शारीरिक पीड़ा के कारण रो रहा है, कोई माँ के अनुपस्थिति के कारण रो रहा हो, या किसी दूसरे कारण से रो रहा हो। अतः रोने का कारणों का पता ठीक ठीक लगाना कठिन है। यह तभी संभव है जब परिस्थिति नियंत्रित हो।

(iii) भिन्न अनुभवों की अभिन्न अभिव्यक्ति :- कभी कभी यह विधि व्यवहार की समुचित व्याख्या करने में सफल नहीं होती है। इसका कारण यह है कि कभी कभी दो भिन्न चेतन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति एक ही तरह के व्यवहार के रूप में होती है। जैसे - दुःख और सुख दोनों अनुभवों के कारण आँखों में आँसू आ सकते हैं। अतः व्यक्ति की आँखों में आँसू देखकर निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि ये दुख के आँसू है या सुख के।

(iv) अस्वाभाविक अध्ययन :- निरीक्षण विधि का एक दोष यह है कि इसके द्वारा जो अध्ययन किया जाता है वह स्वाभाविक नहीं हो पाता है। इसका कारण यह है कि निरीक्षणकर्ता की उपस्थिति से प्राणी का व्यवहार अस्वाभाविक बन जाता है। प्रायः अक्सर यह देखा जाता है कि व्यक्ति का जैसा व्यवहार अकेले में होता है ~~वैसा~~ वैसा दूसरे लोगों की उपस्थिति में नहीं हो पाता है।

(v) व्यक्तिगत कारक :- इस विधि का एक दोष यह है कि प्राणी के व्यवहार के निरीक्षण तथा उसके विश्लेषण एवं व्याख्या पर निरीक्षक की मनोवृति, पूर्वधारणा, आवश्यकता, प्रशिक्षण आदि व्यक्तिगत कारकों का प्रभाव पड़ता है, जिससे निष्कर्ष की दोषपूर्ण होने की संभावना बन जाती है। एक उन्माद पीड़ित रोगी के व्यवहार का निरीक्षण यदि एक मनोचिकित्सक, एक चिकित्सक, एक ओझा, अलग-अलग करें तो तीनों के निष्कर्ष संभवतः अलग अलग होंगे। इस प्रकार निरीक्षक के व्यक्तिगत कारकों के प्रभाव के कारण इस विधि की वैज्ञानिकता घट जाती है।

— x —

Scanned with CamScanner